E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2024; 6(5): 55-57
Received: 16-04-2024
Accepted: 19-05-2024

Amandeep
Research Scholar, Department of Arts, Tantia University, Ganganagar, Rajasthan, India

Dr. NK Somani
Associate Professor, Tantia University, Department of Arts, Tantia University, Ganganagar, Rajasthan, India

Corresponding Author:
Amandeep
Research Scholar, Department of Arts, Tantia University, Ganganagar, Rajasthan, India

हरियाणा के निर्माण में चौ. देवीलाल की भूमिका

Amandeep and NK Somani

DOI: https://doi.org/10.33545/27068919.2024.v6.i5a.1672

सारांश

हरियाणा राज्य के लोगों द्वारा आजादी के प्रथम युद्ध (1857 की क्रांति एवं स्वतंत्रता आंदोलन) में भावनात्मक भागीदारी निभाने के कारण ब्रिटिश शासकों के दिल में प्रतिशोध की भावना सुलग रही थी। प्रतिशोध की इस भावना को शांत करने व इस क्षेत्र के लोगों को राजनीतिक रूप से दण्डित करने के लिए सन् 1858 में ब्रिटिश सरकार ने हरियाणा क्षेत्र को पंजाब के साथ जोड दिया। लेकिन हरियाणावासी अभी भी दिल्ली और पश्चिमी यूपी के लोगों के साथ सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से संबद्ध थे। हालांकि, भौगोलिक एवं राजनीतिक रूप से हरियाणा के लोगों ने अपनी सीमाएं जरूर खो दी थी। लेकिन बेटी और रोटी वाले सांस्कृतिक संबंध उनके अभी भी दिल्ली और यूपी के साथ थे। हरियाणा राज्य के निर्माण की मांग के समय हरियाणा कोई नया शब्द नहीं था। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि इसे एनडब्ल्यू फ्रंटियर से 1858 में अलग कर पंजाब में शामिल कर लिया गया था। पंजाब में सम्मिलित होने के बाद हरियाणा एक ऐसा भू-भाग बन कर रह गया था जिस पर न तो कभी ब्रिटिश सरकार ने ध्यान दिया था और न ही कभी पंजाब के अधिकारियों ने प्रशासनिक व राजनीतिक स्तर पर हरियाणा की हर स्तर पर उपेक्षा होने लगी।

कुटशब्द: हरियाणा, चौ. देवीलाल, ब्रह्मदेवता, कांग्रेस, अधिनियम

प्रस्तावना

हरियाणा राज्य की स्थापना की मांग भारत की आजादी से पहले ही उठना शुरू हो चुकी थी। 1920 के दशक में स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन की मुख्य पार्टी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने आश्वासन दिया था कि देश की आजादी के बाद बड़े भाषायी समूह का अपना अपना अलग प्रांत होगा। लेकिन आजादी के बाद कांग्रेस के राष्ट्रीय नेताओं ने इस आश्वासन को पूरा करने के लिए कोई विशेष कदम नहीं उठाये और अलग प्रांतों की मांग को दबाना शुरू कर दिया गया। इसकी एक बड़ी वजह यह थी कि धर्म के आधार पर देश का एक विभाजन पहले ही भारत और पाकिस्तान के रूप में हो चुका था। इस विभाजन के फलस्वरूप हिंदूओं और मुसलमानों के बीच हुए भीषण दंगों में 10 लाख से ज्यादा लोग मारे गए थे।

शोध विधि

इसमें ऐतिहासिक शोध का प्रयोग किया गया है।

परिणाम और निष्कर्ष

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने आजादी के आंदोलन के दौरान भारतीयों को इस बात का आश्वासन दिया था कि आजादी के बाद अलग राज्यों के निर्माण की मांग पर विचार किया जाएगा। लेकिन अब लोगों को लगने लगा कि कांग्रेस अपने आश्वासन से पीछे हट रही हैं। इसलिए उनके भीतर असंतोष पैदा होने लगा। देश में जगह-जगह धरना-प्रदर्शनों का सिलसिला शुरू हो गया। कन्नड़, मलयालम और मराठी भाषी सभी अपने लिए अलग राज्य के इंतजार में थे।

भाषायी आधार पर पृथक राज्यों की मांग के लिए हो रहे आंदोलन को देखते हुए केन्द्र सरकार ने एक कमेटी का निर्माण किया जिसे जेवीपी कमेटी (जवाहरलाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल, पट्टाभि सीतारमेया) के नाम से जाना गया। इस कमेटी ने भाषा के आधार पर राज्य के गठन की मांग को ठुकराते हुए कहा कि भाषा केवल जोड़ने का ही काम नहीं करती है, बल्कि एक यह एक दूसरे से अलग करने वाली ताकत भी है। इसका असर यह हुआ कि आजादी के वक्त भाषा के आधार पर किसी राज्य का गठन नहीं हुआ। लेकिन केन्द्र सरकार का यह निर्णय ज्यादा दिन तक कायम नहीं रह सका।

प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू और उप-प्रधानमंत्री वल्लभभाई पटेल दोनों ही भाषा के आधार पर राज्यों के गठन की नीति के विरोधी थे। 15 अगस्त, 1947 को जब देश हुआ और धर्म के आधार पर भारतीय उपमहाद्वीप में भारत और पाकिस्तान के नाम से दो राष्ट्र अस्तित्व में आए उस वक्त पं. नेहरू ने कहा था कि 'उपद्रवकारी प्रवृतियां सिर उठा रही हैं। जिन पर अंकुश लगाने के लिए राष्ट्र को शक्तिशाली और एक जूट होना चाहिए। उनका यह भी कहना था कि 'चूंकि देश ने अभी-अभी आजादी प्राप्त की है, उसे विकास का लंबा सफर तय करना है, इसलिए हमे अभी विघटनकारी उदेश्यों की तरफ ध्यान न देकर

देश की उन्नती और विकास में अपना योग देना चाहिए।'

देश की आजादी के बाद जब 1952 में पहला आम चुनाव हुआ। 1952 में संसद के चुनाव के साथ-साथ राज्य विधानसभाओं के लिए भी चुनाव हुए। चुनाव में चौ. देवीलाल सिरसा विधानसभा से विधायक निर्वाचित हुए। लेकिन लहरी सिंह और श्रीराम शर्मा (जो कि हिन्दी क्षेत्र के नेता थे) को पंजाब मंत्रिमंडल में शामिल कर मंत्री पद दिये गए। इस घटना से चौ. देवीलाल को गहरा आघात लगा। देवीलाल के साथ अन्य नेताओं ने भी रोष प्रकट किया। देवीलाल ने विरोध प्रकट करने के लिए चौ. चरणसिंह और हरियाणा क्षेत्र के 25 विधायकों के साथ मिलकर अलग राज्य निर्माण का ज्ञापन सौंपा। इसी प्रकार 1954 में जब चौ. देवीलाल को विधानसभा अध्यक्ष बनाने की मांग उठी तो संयुक्त पंजाब सरकार ने चौ. देवीलाल के नाम पर विचार करने की बजाए पंजाबी क्षेत्र के गुरूदयाल सिंह को विधानसभा का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया।

अलग हरियाणा की मांग को लेकर चल रहे आंदोलन के साथ-साथ दूसरी ओर अलग पंजाब की मांग भी हो रही थी। हरियाणा की मांग का नेतृत्व चौ. देवीलाल और प्रो. शेरसिंह के हाथ में था जबकि पंजाब राज्य की मांग का नेतृत्व अकाली नेता मास्टर तारासिंह कर रहे थे। वे भाषा और धर्म के आधार पर सिखों के लिए अलग पंजाब सूबे की मांग कर रहे थे। मगर पंजाबी भाषी क्षेत्र में उन्हें सभी जातियों का समर्थपन प्राप्त नहीं होने के कारण केंद्र की नेहरू सरकार उनकी मांग को अनदेखा कर रही थी। 1952 के चुनाव में मास्टर तारसिंह की पृथक पंजाब राज्य की मांग को उस समय झटका लगा जब उनकी पार्टी विधानसभा चुनाव में पंजाबी भाषी क्षेत्र की केवल 14 सीटों पर जीत दर्ज कर सकी। मगर मास्टर जी ने हार नहीं मानी और आंदोलन जारी रखा। 1960 में मास्टर तारासिंह ने 48 दिन का अनशन किया। लेकिन उनकी मांग पूरी नहीं हुई। इससे पहले 1959 में जब चौ. देवीलाल ने हरियाणा को भाषा के आधार पर विभाजित करने करने की मांग की तो मास्टर तारासिंह ने पुनः धर्म के आधार पर विभाजिन करने की बात कहकर रोड़ा अटका दिया। उस वक्त चौ. देवीलाल का कहना था कि 'हमारी वेश-भूषा, रहन-सहन व भाषा अलग है। अतः इस आधार पर हमे अलग प्रांत चाहिए।'

सन् 1960 में देवीलालजी ने तृतीय पंचवर्षीय योजना में हिन्दी भाषी व हरियाणावी भाषी लोगों के साथ किए गए भेदभाव को लोगों के सामने रखा। उन्होंने लोगों को समझाया कि हमारे प्रदेश के नेताओं द्वारा हिन्दी क्षेत्र की अपेक्षा पंजाबी क्षेत्र के लोगों को अधिक नौकरियां दी जा रही है। उन्होंने सरकारी आंकड़े रखते हुए कहा कि जनता को समझाया कि सचिव व कमिश्नर के 9 पदों में से हिन्दी क्षेत्र के लोगों को एक भी पद नहीं मिला। 10 लोकसेवा अधिकारियों में से केवल 1 पद, पंजाब लोकसेवा अधिकारियों के 300 पदों में से हिन्दी क्षेत्र को केवल 75 पद, पुलिस उप अधीक्षक के पदों में भी केवल 1 पद और जिला स्तर पर क्रमोनन्त किए गए 18 विद्यालयों में से केवल 4 विद्यालय हिन्दी भाषी क्षेत्र में दिए गए हैं।

1962 तक आते-आते में हरियाणा प्रांत की मांग बहुत अधिक प्रबल हो चुकी थी। संयुक्त पंजाब सरकार अलग राज्य की मांग को दबाने के लिए राजनीतिक हथकंडेबाजी का सहारा लेने लगी। पंजाब सरकार और उससे जुड़े नेताओं ने विधानसभा के भीतर अलग राज्य की मांग को कमजोर करने के लिए विधानसभा के चुनाव में टिकटों का गलत ढंग से बंटवारा किया गया ताकि हिन्दी क्षेत्र के नेताओं की आवाज कमजोर पड़ जाए। 13

पंजाब सरकार जब राजनीतिक हथकंडों पर उतर आई तो चौ. देवीलाल और उनके साथियों ने सड़कों पर उतर कर आंदोलन करने के लिए 1962 में प्रोग्रेसिव इंडिपेंडेट पार्टी के नाम से एक गठबंधन का निर्माण किया। 22 सदस्यों वाले इस गठबंधन का नेतृत्व चौ. देवीलाल को सौंपा गया। इस गठबंधन में आर्चाय कृप्लानी, चौ. देवीलाल, मौलवी अब्दूल गन्नी, मास्टर तारासिंह और लाला जगतनाराण जैसे बड़े आंदोलनकारी और जन नेता शामिल थे। गठबंधन के निर्माण की बड़ी वजह संयुक्त पंजाब के मुख्यमंत्री प्रतापसिंह कौरे की हिन्दी भाषी क्षेत्र के प्रति अन्ययापूर्ण नीतियां थी। गठबंधन में सम्मिलित सभी नेताओं ने एक जुट होकर हरियाणा क्षेत्र के लोगों के साथ किए जाने वाले भेदभाव के खिलाफ आवाज उठायी। चौ. देवीलाल और उनके साथियों के प्रयासों से प्रोग्रेसिव इंडिपेंडेट पार्टी के प्रति लोगों का विश्वास बढ़ रहा था। इसी अवधी के दौरान वर्ष 1962 में हुए आम चुनाव व पंजाब विधानसभा चुनाव में इस गठबंधन ने आठ संसदसीय सीटो में से दो और 54 विधानसभा सीटों में से 17 पर विजय प्राप्त की।"

लोकसभा और विधान सभा चुनावों में शानदार सफलता प्राप्त करने के बाद चौ. देवीलाल के होंसले सातवें आसमान पर थे। गठबंधन की इस अप्रत्याशित सफलता से उत्साहित होकर चौ. देवीलाल ने वर्ष 1963 में 'यूनाईडेड फ्रंट' के नाम से एक नए संगठन का निर्माण किया। 24 सदस्यों वाला यह संगठन हरियाणा राज्य के निर्माण के लिए दूसरा महत्वपूर्ण संगठन माना जाता है। 'यूनाईडेड फ्रंट ने चौ. देवीलाल के नेतृत्व में एक ज्ञापन तैयार कर प्रधानमंत्री पं. नेहरू को सौंपा। इस ज्ञापन में कहा गया था कि सरकार हरियाणा राज्य के निर्माण में भेदभाव कर रही है।

चौ. देवीलाल और उनके साथियों द्वारा दिए गए ज्ञापन की भावना को समझते हुए सरकार ने पंजाब के मुख्यमंत्री प्रतापसिंह कैरो द्वारा हरियाणा के साथ किए जाने वाले भेदभाव की जांच हेतू एक आयोग का गठन किया। न्यायाधीश एस. आर. दास के नेतृत्व में गठित इस आयोग ने अपनी जांच में मुख्यमंत्री प्रतापसिंह को सत्ता के दुरूपयोग का दोषी पाया गया और उन्हें अपने पद से त्याग पत्र देना पडा।

7 दिसंबर, 1965 को हरियाणा को अलग राज्य बनाने के लिए चौ. देवीलाल के नेतृत्व में हरियाणा लोकसमिति का गठन किया गया। 21 सदस्यों की इस समिति ने अलग राज्य की मांग की आवाज बुलंद करने के लिए रोहतक में एक महासम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन के संयोजक चौ. देवीलाल थे। सम्मेलन की तारीख से ठीक पहले चौ. देवीलाल गंभीर रूप से बिमार हो गए थे। डॉक्टरों ने उन्हें पूरी तरह से आराम करने की सलाह देते हुए भीडभाड से दूर रहने की हिदायत दी। पारिवारिक सदस्यों व शुभचिंतकों की मनाही के बावजूद चौ. देवीलाल ने सम्मेलन में भाग लिया और हरियाणा राज्य की मांग बुंलद की। चौ. देवीलाल का कहना था कि अगर मैं सम्मेलन में जाने से बच गया तो मेरा हरियाणा मर जायेगा। 15

11 जनवरी, 1966 को श्रीलाल बहादूर शास्त्री के निधन के बाद श्रीमती इन्दिरा गांधी भारत की प्रधानमंत्री बनी। चौ. देवीलाल और प्रो. शेरसिंह आदि नेताओं ने श्रीमती गांधी से मिलकर पंजाब के हिन्दी भाषी क्षेत्र को अलग राज्य बनाने की मांग की। 16

श्रीमती गांधी ने इस मांग के प्रति सहानुभूति दिखाते हुए 23 अप्रैल, 1966 को जे. सी. शाह के नेतृत्व में एक सीमा आयोग का गठन किया गया। इस आयोग ने 31 मई, 1966 को अपनी रिर्पोट केन्द्र सरकार को सौंप दी। आयोग ने अपनी रिर्पोट में हिसार, महेंद्रगढ़, गुड़गांव, रोहतक और करनाल के तत्कालीन जिलों को हरियाणा के नए राज्य का हिस्सा बनाए जाने की अनुशंशा की। इसके अलावा संगरूर जिले की तहसील-जींद और नरवाना के साथ-साथ नारायणगढ़अंबाला और जगाधरी को नए राज्य में शामिल किये जाने का सुझाव दिया।"

प्रदेश की राजनीति में चौ. देवीलाल जब 1966 में पंजाब से अलग होकर हरियाणा नया राज्य बना। तब से लेकर बीसवीं सदी के अंत तक यहां की राजनीति 'तीन लाल' के चारों और घूमती रही है। ये तीन लाल थे-चौ. देवीलाल, जो ताऊ देवीलाल के नाम से जाने गए। चौ. बंसीलाल जिन्हें हरियाणा के विकास पुरूष और उनकी अखड मिजाजी के लिए जाना जाता है, और तीसरे भजन लाल जिन्होंने जोड-तोड की राजनीति के नए मायने गढ़े। इन तीनों ही नेताओं ने कांग्रेस से अपनी राजनीति शुरू की और राजनीतिक जीवन के किसी न किसी पड़ाव पर अपनी अलग क्षेत्रीय पार्टी भी बनाई। इन नेताओं में चौ. देवीलाल सत्तर-अस्सी के दशक में कांग्रेस के विरूद्ध एक बड़ा चेहरा बनकर उभरे।

हरियाणा की राजनीति में किंगमेकर के नाम से प्रसिद्ध हुए चौ. देवीलाल दो बार हरियाणा के मुख्यमंत्री बने। इसके अलावा वे केन्द्र में वी.पी. सिंह व चंद्रशेखर की सरकार में उप-प्रधानमंत्री भी रहे। चौ. देवीलाल को आज भी एक ऐसे राजनेता के तौर पर याद किया जाता है, जिन्होंने कुर्सी से अधिक अपने सिद्धातों को महत्व दिया।

अगर हरियाणा प्रदेश की क्षेत्रीय राजनीति की बात करें तो भी चौ. देवीलाल सबसे बड़े चेहरे के रूप में नजर आते हैं। हांलाकि, उनसे पहले क्षेत्रीय पार्टियां बनाने की

एक-दो कोशिश तो जरूर हुई मगर वे ज्यादा सफल नहीं हो सकी। चौ. देवीलाल चौटाला के एक बड़े जमींदार परिवार से थे। जैसा की पिछले अध्याय में बताया जा चुका है कि आजादी के आंदोलन में उन्होंने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था। आजादी के बाद उनकी छवि एक बड़े किसान नेता के रूप में बनी। 1952 में वे पंजाब विधानसभा के लिए कांग्रेस की टिकट पर विधायक चुने गए। किसानों और क्षेत्रीय मुददों से लगातार जुडे रहने के कारण वह हरियाणा राजनीति में एक बड़े राजनेता के रूप में उभरे।

संदर्भ सुची

1. डॉ. रामजीलाल, किसानों और श्रमिकों के मसीहा और असली जननायक चौ. देवीलाल, पूर्व प्राचार्य दयालसिंह कॉलेज, करनाल, हरियाणा।
2. संतोष बांगड़, चौधरी देवीलाल की वर्ग-चेतना
3. डॉ. चन्द्र त्रिखा, जननायक चौधरी देवी लाल व्यक्तित्व एवं जीवन दर्शन, गौरवगाथा, वर्ष 2002, चौ. देवीलाल स्मारक ट्रस्ट नई दिल्ली पृ.सं. 21
4. वही
5. K.C. Yadav, Chaudhari Devi Lal Political Biography, hope India publication Delhi, 2002, page 58
6. वही
7. डॉ. चन्द्र त्रिखा, जननायक चौधरी देवी लाल व्यक्तित्व एवं जीवन दर्शन, गौरवगाथा, वर्ष 2002, चौ. देवीलाल स्मारक ट्रस्ट नई दिल्ली पृ.सं. 23
8. वही
9. Ajay Sing Chautala, Chaudhary Devi lal, life, work and philosophy, hope india publication, 2003 page 87
10. वही
11. राधेश्याम शर्मा, धरती पुत्र देवीलाल, जननायकः चौधरी देवीलाल स्मृति ग्रंथ, चौधरी देवीलाल स्मारक ट्रस्ट, नई दिल्ली, वर्ष 2001, पृ.सं. 87
12. सत्ता में होते हुए भी किसानों के संघर्ष में कूद पड़ते थे ताऊ देवीलाल, पंजाब केसरी, 25 सिंतबर, 2021
13. डॉ. चन्द्र त्रिखा, जननायक चौधरी देवी लाल व्यक्तित्व एवं जीवन दर्शन, गौरव गाथा, वर्ष 2002, चौ. देवीलाल स्मारक ट्रस्ट नई दिल्ली पृसं. 21
14. डॉ. महेंद्र सिंह मलिक, चौ. देवीलाल बनाम किसान आंदोलन, 4 अप्रैल, 2021, हरि भूमि।
15. संतोष बांगड, जननायक चौधरी देवी लाल व्यक्तित्व एवं जीवन दर्शन, गौरव गाथा, वर्ष 2002, चौ. देवीलाल स्मारक ट्रस्ट नई दिल्ली पृसं. 120
16. वही
17. राधेश्याम शर्मा, धरती पुत्र देवीलाल, जननायकः चौधरी देवीलाल स्मृति ग्रंथ, चौधरी देवीलाल स्मारक ट्रस्ट, नई दिल्ली, वर्ष 2001, पृ.सं. 87
18. शोक प्रस्ताव, हरियाणा विधान सभा, 11 जून, 2001
19. K.C. Yadav, Chaudhari Devi Lal Political Biography, hope India publication Delhi, 2002, page 58
20. रणवीर ढाका, जननायक का आर्थिक चिंतन, गौरव गाथा, वर्ष 2002. चौ. देवीलाल स्मारक ट्रस्ट नई दिल्ली पृसं. 121